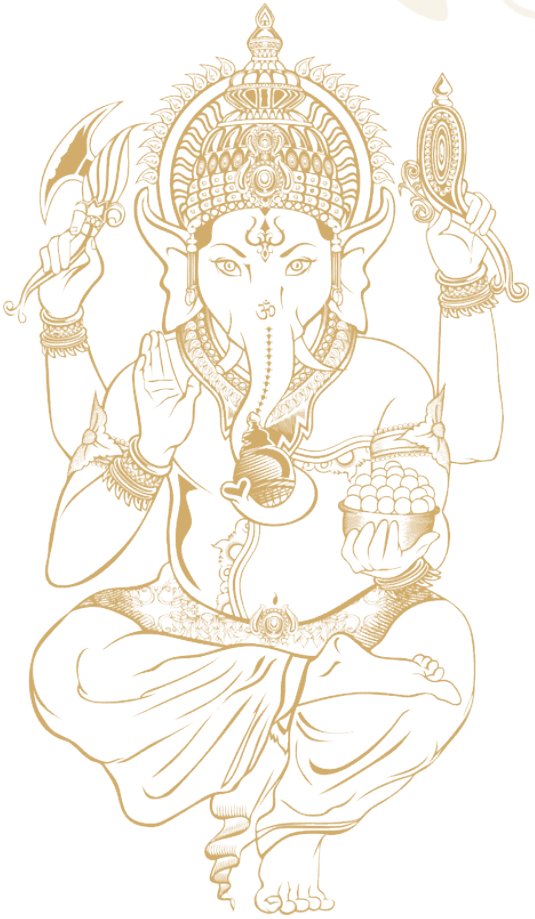

Mr. Nikunj Baby Boy

29 Aug 2025

03:55 PM

Ghaziabad

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119345801**

तिथि 29/08/2025 **समय** 15:55:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Ghaziabad **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:00
अक्षांश 28:40:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:06:16 घं
वेलान्तर	00:00:56 घं
सूर्योदय	05:56:49 घं
सूर्यास्त	18:44:56 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	6
नक्षत्र	विशाखा
योग	ऐन्द्र
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ती-तीरथ
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	चंद्र
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

गुरु 13वर्ष 5मा 17दि

गुरु

29/08/2025
15/02/2039

	29/08/2025
शनि	17/10/2027
बुध	22/01/2030
केतु	29/12/2030
शुक्र	29/08/2033
सूर्य	17/06/2034
चन्द्र	17/10/2035
मंगल	22/09/2036
राहु	15/02/2039

योगिनी

धान्या 2वर्ष 6मा 9दि

धान्या

29/08/2025
08/03/2028

	29/08/2025
भ्रामरी	08/10/2025
भद्रिका	09/03/2026
उल्का	07/09/2026
सिद्धा	09/04/2027
संकटा	08/12/2027
मंगला	07/01/2028
पिंगला	08/03/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:55:38	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			12:07:56	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	मूलत्रिकोण	1.61	पुत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			22:06:44	तुला	विशाखा	1	गुरु	शनि	सम राशि	1.33	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			20:02:02	कन्या	हस्त	4	चंद्र	केतु	शत्रु राशि	1.19	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध			28:08:05	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.88	आत्मा	ज्ञाति	विपत
गुरु			23:11:24	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.26	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			10:15:54	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.25	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि	व		05:58:55	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.28	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु			24:10:06	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			24:10:06	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

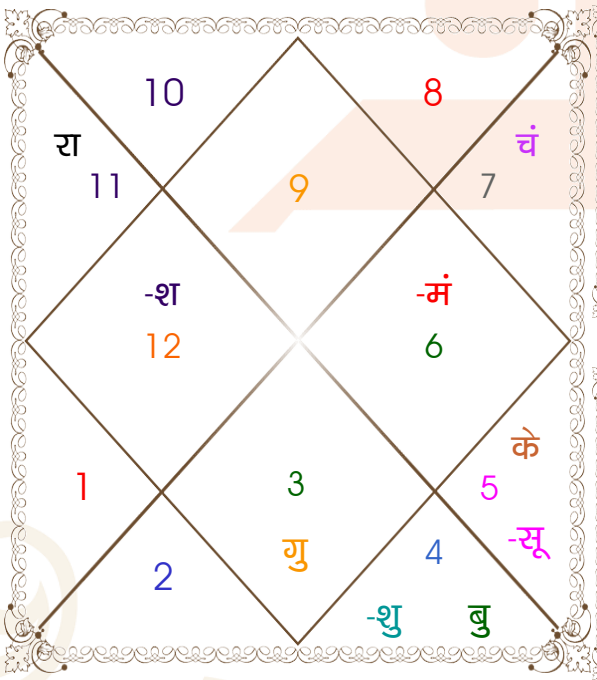

चन्द्र कुंडली

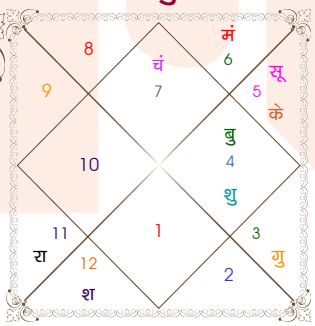

नवमांश कुंडली

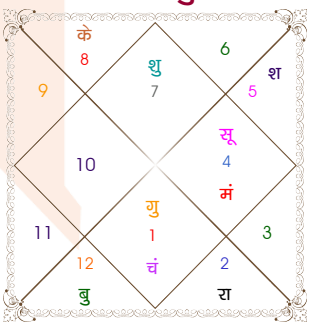

सर्वाष्टकवर्ग

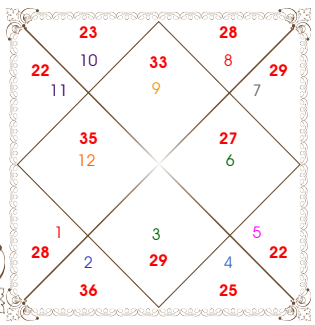

दशमांश कुंडली

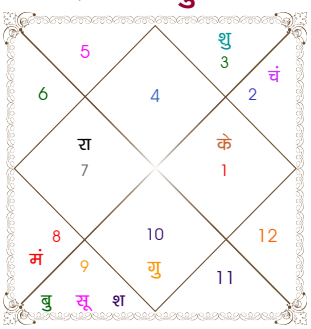

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, गण राक्षस, योनि व्याघ्र, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ति" या "ती" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा-तीरथ राम।

आप पूर्ण रूप से हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा उसी की सलाह तथा निर्देशानुसार अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। उसकी आज्ञा के बिना आप किसी भी सांसारिक कार्य को करने में स्वयं को असहाय सा महसूस करेंगे। आप छोटी छोटी बातों तथा वस्तुओं पर यदा कदा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे शत्रुवर्ग के ऊपर आपका गहन प्रभाव रहेगा तथा वे लोग अपने आपको आपसे सर्वथा पराजित समझेंगे। इसके साथ ही आपकी प्रकृति में क्रोध की भी प्रबलता रहेगी। अतः आप बात बेबात पर शीघ्र ही उत्तेजित भी होते रहेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

समाज में अन्य जनो के प्रति कभी कभी आपके मन में अकारण ही ईर्ष्या तथा द्वेष का भाव विद्यमान रहेगा। यदि कोई भी व्यक्ति आपसे कोई अच्छा कार्य करेगा अथवा कोई सफलता प्राप्त करेगा तो अनायास ही उसके प्रति आपके मन में ईर्ष्या उत्पन्न होने लगेगी। आप स्वभाव से ही अनावश्यक इच्छाओं तथा वस्तुओं के प्रति आपके मन में उत्सुकता रहेगी। आपका शरीर कान्ति से हमेशा सुशोभित रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी वाक्पटुता से सबको प्रभावित करेंगे। आप अन्य लोगों से तर्कहीन बातों से विवाद में भी नित्य तत्पर रहेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगे तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही आपका मित्रता का क्षेत्र विशेष विस्तृत नहीं रहेगा तथा कम ही लोग आपके मित्र होंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यो में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपके हृदय में दया तथा करूणा के भाव की भी अल्पता रहेगी तथा निपुणता की इसमें प्रबलता रहेगी। अन्य लोगों से आपका वाद विवाद चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यो में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुदर रहेंगे। आपकी नासिका उन्नत तथा आखें भी देखने में बड़ी बड़ी होंगी। आप विविध प्रकार के वाहनादि साधनो से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप वाहन तथा भूमि से शक्तिशाली होकर इनसे पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समाज में सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं उनको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे।

आप नाना प्रकार के धन वैभव तथा ऐश्वर्य से युक्त होकर जीवन सुखपूर्वक उसका उपभोग करने में सर्वथा सफलता प्राप्त करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे एवं समस्त सांसारिक कार्यों को उनके निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे। कार्यों को सम्पन्न करने में आप हमेशा प्रवीणता को प्राप्त रहेंगे तथा सुगमतापूर्वक किसी भी कार्य को करने में समर्थ रहेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा तथा भक्ति का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्यादि के संग्रह करने की प्रवृति से भी हमेशा युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के लिए कल्याणकारी कार्यों को करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा कार्य में सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा विद्धता से सुशोभित होकर पवित्रता पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर सुगन्धित रहेगा।घूमने तथा यात्रा करने के आप विशेष शौकीन रहेंगे अतः यात्रादि में आपका अधिकाँश समय व्यतीत होगा। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे। अतः व्यापारिक कार्यों में आप विशेष रूचि लेंगे। अपने समीपी बन्धु जनों की आप यत्नपूर्वक भलाई करेंगे परन्तु बाद में आपको इन्ही लोगों उषेद्विी भी होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा अपितु धन से सदा सुसम्पन्न रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा अपने अधिकाँश कार्यों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान रहेगा तथा आपकी बातों से ही आपकी न्यायप्रियता का आभास होगा। आपकी इसी प्रवृति से प्रभावित होकर लोग आपको अपने विवादों का समाधान आदि करने में मध्यस्थ या पंच नियुक्त करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प सख्यां में होगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से ही उदय होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा राज्य के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप निपुण रहेंगे तथा इनसे पूर्ण आदर तथा

सहयोग प्राप्त करेंगे। आप कभी कभी बहुत अधिक बोलेंगे जिसे अन्य जन पसन्द नहीं करेंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आप ज्योतिष अथवा ग्रहनक्षत्र आदि के ज्ञान करने वाले शास्त्र में श्रेष्ठ विद्वान होंगे। बन्धु एवं सेवकों के प्रति आपके मन में अनुराग की भावना रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कभी कभी अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे इससे आपको दुःख की अनुभूति करनी पडेगी। आप अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे फलतः सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में दया तथा करूणा की भावना रहेगी एवं समय समय पर अपनी इस भावना का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। आपके नेत्रों में भी चंचलता व्याप्त रहेगी तथा धनागमन भी विषम स्थितियों में रहेगा अर्थात कभी अत्याधिक धनागमन होगा तो कभी अत्यन्त अल्प मात्रा में रहेगा। आप घर में अपने को बलवान तथा घर से बाहर अत्यन्त ही निर्बल महसूस करेंगे। मित्रों के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा देश से बाहर विदेश में भी आप प्रवास करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप विभिन्न प्रकार के वाहनों से हमेशा युक्त रहेंगे एवं आपके अर्न्तमन में दानशीलता की भावना विद्यमान रहेगी जिसका समय समय पर आप प्रदर्शन करते रहेंगे। स्त्री के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर की भी प्राप्ति होगी। साथ ही आपका सम्पूर्ण जीवन वैभव से सुसम्पन्न रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण कभी कभी आपकी प्रवृति व्यर्थ की बातों को अधिक कहने की रहेगी आपका हृदय भी कठोर होगा तथा दया के भाव की इसमें न्यूनता रहेगा। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे तथा साहसपूर्वक ही अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित होने वाले भी होंगे। अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। कार्य को आप शरीर से बलिष्ठ रहेंगे तथा अन्य जनों से आपका

विवणद चलता रहेगा इससे समाज के अधिकांश लोग आपसे द्वेष की भावना रखेंगे। अतः आप अन्य जनों से आप को प्रेम तथा विनम्रतणपूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप अपने जीवन काल में प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी ग्रसित हो सकते है आपकी मुखाकृति दीर्ध होगी तथा आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही कठोर भाषण का उपयोग करेंगे जिससे श्रोता अत्यन्त ही कष्ट की अनुभूति करेगा। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शाब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने कार्य को करने की इच्छा करेंगे। बाहरी दबाव या हस्तक्षेप आपको पसन्द नहीं होगा। धन धान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण प्ररिशिक्षित होंगे तथा इससे आप पूर्ण मान सम्मान तथा आदर के अधिकारी होंगे। आप गुणों को शीघ्रता से ग्रहण करने की क्षमता से भी सम्पन्न रहेंगे तथा अच्छी अच्छी बातों को शीघ्र धारण करेंगे। लेकिन आपका कमजोर पक्ष यह रहेगा कि आप अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा करेंगे। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता होगी।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त

ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फलदायक रहेंगे अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर एवं धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता या अन्य महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नही हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन,

चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

ACHARYA VIKRANT SANKLE
VIKRANT JYOTISH KENDRA
B -13/12 VASANT VIHAR NANAKHEDA UJJAIN (MP)
8718906740
astro.sankle@gmail.com